रिकॉर्ड :– नई उमर की कलियों..... ॐ पिताश्री 14/7/63
ओम् शांति। ज्ञान सागर और ज्ञान गंगाएँ, ज्ञान जमुनाएँ। उस गंगा को ज्ञान गंगा नहीं कहा जाता। वो तो पानी की गंगा–जमुना है। तुम हो ज्ञान सागर से निकली हुई ज्ञान गंगाएँ। हर एक अपन को ज्ञान गंगा समझो। कहते हैं, घर को स्वर्ग बनाओ। तुम्हारा पिअर घर और ससुर घर हर एक का है। पुरुषों को भी पिअर घर और ससुर घर है, तो स्त्रियों को भी है। ऐसी कन्याओं और माताओं को बाबा समझा रहे हैं। आगे भी नाम लेकर समझाते थे– हे सत्यभामा! हे जामवंती! क्या बच्चियाँ अब तक सोई पड़ी हो? पिअर घर, ससुर घर वालों पर ज्ञान वर्षा क्यों नहीं करती हो? घर–2 जो नर्क है वो तब स्वर्ग कैसे बनेंगे! भारत में घर–2 में स्वर्ग था, जिसको सोझरा कहा जाता है। नर्क को घोर अंधियारा कहा जाता है। भक्तिमार्ग में अंधियारे में मनुष्य ठोकरें खाते रहते हैं। (कि)तने धक्के खाते हैं। तीर्थ यात्रा पर जाकर कितने हैरान होते हैं। सो बिचारे, गुरु–गुसाईं, जिस्मानी पण्डों के हाथ जाकर फँसे हैं। देखो, अभी वर्षा का टाइम है। उस बरसात से तो खेती–बाड़ी होती है। यह फिर है (ज्ञान) अमृत की वर्षा, जिससे मनुष्य देवता बनते हैं वा भारत दैवी सृष्टि बन जाती है। अब आसुरी सृष्टि है, असुरों का निवास है। किसमें असुरों का निवास है? उनका रूप चाहिए ना! 5 विकारों ने आत्मा में निवास किया है, शरीर में नहीं। आत्मा मैली हुई है, न कि शरीर। मन और बुद्धि आत्मा में है। म(न) विख खाने चलायमान होता है। कहते हैं, अब ऐसे मन को हम शुद्ध कैसे बनावें, जो विकारों तरफ मन न ...। सिर्फ शरीर को धोने से कोई फायदा नहीं है। मन को धोया जाता है ज्ञानामृत है। उनको अब धोना है अ(र्थात्)

आत्मा को शुद्ध बनाना है। मन संकल्प करते हैं। बुद्धि उसपर जजमेंट करती है कि यह रॉंग है वा राइट है। अच्छे विचार को संकल्प, बुरे को विकल्प कहा जाता है। फिर इस पर बुद्धि विचार करती है– मन इस तरफ भागना चाहिए वा नहीं। अभी बुद्धि ने तय किया है कि मन को इस पुरानी दुनिया तरफ नहीं दौड़ाना है, एक शिवबाबा पास दौड़ाना है। अपन से बातें करनी हैं। लिखते हैं, मन बड़ा तूफानी है। अब बाप ने बुद्धि का ताला खोला है। बाप कहते हैं, अब जजमेंट करो; क्योंकि तुम जानते हो, अगर उल्टा काम करेंगे तो नर्कवासी बनेंगे; श्रीमत पर सुल्टा काम करने से स्वर्गवासी बनेंगे। मन तो तूफानी घोड़ा है। अभी बाबा ने बुद्धि का ताला खोला है, राइट और रॉंग को समझने का। आगे ताला बंद था तो विकर्म ही करते थे। 90% विकर्म करते थे, 10% अच्छा कर्म करते थे। सभी से बड़ा विकर्म है काम–कटारी चलाना। नर्क में मनुष्य विकर्म ही करते हैं। स्वर्ग में रहते हैं देवताएँ; नर्क में हैं मनुष्य। स्वर्ग तो ज़रूर बाप ही रचेंगे। बाप से ही वर्सा मिलता है। अब बाप समझाते हैं– क्या बच्चे तुम अभी तक सोए पड़े हो?– जो बाबा–मम्मा कहते हैं अथवा अपन को साजन की सजनी समझते हैं, साजन को याद करते हैं। तो साजन कहते हैं, ऐसे ही थोड़े ही तुम महाराणी बनेंगे! हे सत्यभामा, हे कर्मादेवी! तुम क्या करती हो? जब तक औरों को स्वर्गवासी न बनाया है तो स्वर्ग में कैसे जावेंगे! बस, ऐसे ही बैठे हो। कौड़ी से हीरे जैसा साहुकार बनाना यह बाप का धंधा बच्चों को भी करना चाहिए ना! भारत को हीरे जैसा पावन बनाओ। अभी जन्माष्टमी के दिन आते हैं। चित्र उठाए जाकर समझाओ कि ऐसे कृष्ण समान पावन बनो। यह श्री कृष्ण सतयुग का पावन फर्स्ट प्रिन्स कब बना? ज़रूर सतयुग से आगे पतित दुनिया थी तब ही पतित से पावन बना है। उनके 84 जन्म क्लीयर लिखे हुए हैं। पतित–पावन तो है एक प०, जिसको सभी याद करते हैं– हे भगवान! भगवान कहने से बुद्धि निराकार तरफ चली जाती है। राम कहने से फिर वो चित्र सामने आ जावेगा। भगवान निराकार ही है, वो साकार होता नहीं। प० साकार होता नहीं। मनुष्यों को यह भी बुद्धि नहीं है, तो उन्हों का राम–सीता आदि तरफ ध्यान चला जाता है। बाप को भूल गए हैं। कहते भी हैं, हम निराकार उपासक हैं, वो हम सभी का मालिक है; परन्तु मालिक की बायोग्राफी, ऑक्युपेशन को तो जानना चाहिए ना! तो बाप समझाते हैं, तुमको घर–2 में स्वर्ग बनाना है। तीर्थों आदि पर बहुत सर्विस है। कौरवों का है बड़ा झुण्ड; पाण्डवों का है छोटा झुण्ड। राम गयो, रावण गयो, जिनका बहु परिवार। तुम्हारा तो बहुत छोटा परिवार है। उनमें भी नम्बरवार हैं। कोई तो महा बलवान है। माला महाबलवान शक्तियों की बनती है। अबलाओं पर कितने सितम होते हैं– पति मारते हैं, छुट्टी न देते। इसमें फिर नष्टोमोहा बनना चाहिए। तुम सभी का साजन तो एक शिवबाबा है ना! सभी सजनियों का एक साजन है। वो ही ईश्वर, गुरु, सब कुछ है। वो लोग फिर उस पति के लिए कह देते कि गुरु ईश्वर है। अरे, विकारी मनुष्य थोड़े ही ईश्वर हो सकते। माता की कितनी दुर्दशा कर रहे हैं। यह ऐसा उल्टा खेल किसने बनाया? शंकराचार्य जैसे गुरु लोग ने। उन्हों का है निवृत्तिमार्ग, स्त्री का मुँह नहीं देखते। वो है शंकराचार्य; यह है शिवाचार्य। अब शिवाचार्य को कोई नहीं जानते। उन्होंने फिर कृष्ण को समझ लिया है। अब शंकराचार्य वाच्य, नारी नर्क का द्वार है और शिवाचार्य वाच्य, नारी स्वर्ग का द्वार है। ऐसे शिवबाबा कहते हैं। रात–दिन का फर्क है। तो अब खड़ा होना चाहिए। ऐसे शंकराचार्य की सेना पर जीत पहननी है। ऐसे थोड़े ही घर में चुप कर बैठने से जीत पहनेंगे। झुण्डों में (घु)स जाना है। उनको समझाना है। इसमें हिम्मत चाहिए ना। माताएँ बंधन में बाँधी रहती हैं; क्योंकि सीढ़ी चढ़ी है फिर उतर नहीं सकतीं। पति में, बच्चों में अति मोह। यह हुई अज्ञान की बात। अब ज्ञानवान स्त्री तो कहेगी, बच्चा अगर सुपूत न बने, स्वर्गवासी न बने तो मुआ भला। मरेंगे तो सभी। जो पवित्र न बनेंगे वो सभी मरेंगे। तुम जानते हो अगर न सुधरेंगे, तो मरेंगे; क्योंकि कब्रस्तान दुनिया है ना! अनगिनत मरेंगे। तो सिर्फ कहते रहते कि बंधन है क्या करें। अरे, बंधन को तो तोड़ना पड़े ना! समझाना है, हमको तो सर्विस पर जाना है। कौरवों को

माइयों और पाण्डवों की माइयाँ की भेंट करो। वो हैं हिंसक; तुम अहिंसक। वो कितनी फुर्त हैं, बाहर जाकर लेक्चर आदि करती हैं। तुम तो वो ही जैसी गृहस्थी रीढ़–बकरियाँ हो। ज्ञान–योगबल से समझाना तो है ना! बंधन करते–2 रह जावेंगी। सर्विस कहाँ की? प्रजा कहाँ बनाती हो? काँटों को कली बनाना है तब फिर कली से फूल बने। सिर्फ कली न बनना है, खुशबूएँ दार फूल बनना है। फूल वो जो आप समान बनाते हैं। कली कहाँ मुरझाए जावेगी। तूफानों में कलियाँ टूट पड़ती हैं। ज्ञान और याग में रहेंगे तो फूल बन जावेंगे। तूफान तो बहुत आने वाले हैं– माया के तूफान, कैलेमिटीज़ के तूफान। कलियाँ तो ठहर न सकेंगी। हनुमान का मिसाल भी यहाँ का है। हनुमान महावीर ने पैर रखा, रावण हिलाए न सका। तो ऐसा महावीर बनना चाहिए ना! नहीं तो प्रजा में चले जावेंगे। राजधानी बननी है ना। यहाँ भी वो लोग अपनी राजधानी समझते हैं ना। प्रजा देखती हैं– इनको कितने सुख हैं, बड़े–2 मकान हैं! वहाँ भी ऐसे होगा, सोने–महलों में रहेंगे। ऐसे न हो, वहाँ भी कहना पड़े, यह कितने साहुकार हैं। तुमको पुरुषार्थ कर साहुकार बनना है। पति छुट्टी न देता, मारता है। असुरों ने तो अत्याचार किए ही हैं। सभी दुर्योधन है ना! एक/दो को नगन करने वाले। अभी तुम बच्चे जानते हो, देवता धर्म की स्थापना हो रही है। द्वापर में गीता को ले गए हैं। वहाँ देवता धर्म कहाँ से आया? कुछ भी समझते नहीं। बड़े–2 विद्वान–आचार्य, फिलॉसफर्स आजकल तो बहुत बड़े–2 टाइटल रखवाते हैं, फिलॉसफी कुछ भी नहीं जानते। बाहर वाले समझते हैं, प्राचीन भारत का ज्ञान भारत में है। इन विद्वान–आचार्य जैसे ठग कोई नहीं। जाकर पैसा लूटा आते हैं या क्रिश्चियन धर्म वाले को यहाँ सन्यासी आदि बना देते। हेविनली अबोड में तो जा न सके। तुम बच्चे जागो तो तुम्हारा बहुत नाम निकल जाए क्रिश्चियन्स में भी। यह नॉलेज हमको फादर ने दी है। फादर आया हुआ है। नाम भी है, शिव जयंती। शिव ने जन्म लिया है, अ(वतार) लिया है। शिव जयन्ती ही राइट अक्षर है। ऐसे तो नहीं कहेंगे, रुद्र जयंती अथवा सोमनाथ जयंती। शिव है ही निराकार। बाकी मनुष्यों ने नाम अनेक रख दिए हैं। राइट नाम शिव जयंती है। ज़रूर उनका जन्म हुआ है; परन्तु कैसे, यह कोई भी नहीं जानते। अब शिवबाबा खुद बतलाते हैं, ऐसे जन्म लिया था। ब्रह्मा के तन में प्रवेश किया था। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। किसकी? स्वर्ग की। भगवान ज़रूर स्वर्ग रचेगा। नर्क तो नहीं रचेगा। अब ब्रह्मा को क्रियेटर वा ज्ञान सागर नहीं कहा जाता। ज्ञान सागर एक शिव है। उसने आकर ब्रह्मा द्वारा स्वर्ग रचा है, पतितों को पावन बनाया है। अब ब्रह्मा का चित्र दिखाते हैं विष्णु की नाभि से निकला; परन्तु वास्तव में है शिव जयन्ती। तो शिव से ब्रह्मा निकलता है। शिव ने ब्रह्मा को जन्म दिया। विष्णु के नाभि से तो निकलता नहीं। ब्र०वि०शं० तीनों शिव के बच्चे हैं। शिव को न जानने कारण विष्णु के नाभि से दिखा दिया है। वास्तव में शिव के नाभि से ब्र०वि०शं० निकले। ब्रह्मा से तो स्थापना हुई, तो नर्क की स्थापना थोड़े ही करेंगे। ब्रह्मा शिव का बच्चा है ना! तो बच्चे द्वारा सभी नॉलेज है। वेद–शास्त्रों का सार बताते हैं। कहते हैं, जज करो– ब्र०वि०शं० मेरे बच्चे ठहरे ना! नाभि की तो बात नहीं है। मैंने कैसे रचा सो भी समझाता हूँ। ब्रह्मा के मुख द्वारा ब्राह्मण रचे, न कि नाभि से। बच्चे गोद में लेते हैं ना, तो वो मुखवंशावली ठहरे। नाभि अर्थात् पेट से निकले। अब विष्णु को पेट कहाँ से आए, जि(स)से ब्रह्मा निकले। कितनी मूर्खता है! अभी बाबा ने ज्ञान दिया है तो समझते हैं, अति मूर्ख थे। चित्रों आदि में भी बिल्कुल नॉनसेंस ल(गा) दिया है। अब यह किसको सुनावें? कोटों में कोऊ ही निकलेंगे। दुर्योधन तो सब हैं, एक नहीं। एक अर्जुन, एक संजन नहीं, सब हैं। सब दुर्योधन, अंधे के औलाद अंधे हैं। अच्छा, समझो, प्रधानमंत्री को ज्ञान देते हैं; परन्तु वह क्या करेंगे। उनकी बुद्धि में वाइलेंस युद्ध है– शहर को बचाना है, यह करना है। तुम्हारे ऊपर तो वह पहाड़ न है। तुम अबलाएँ, कुबजाएँ कैसे उठाती हो। तुम सिर्फ समझाओ कि अभी तो कलियुग है। सतयुग में ल०ना० का राज्य था। अभी तो राजा है नहीं। कौरव राज्य में राजा का राज्य हो नहीं सकता। इसके बाद में तुम्हारा राज्य। यादव, कौरव, पाण्डव

भी लि(खा) हुआ है। पाण्डव पति कृष्ण तो हो नहीं सकता। कृष्ण को तो सब पहचान लेते; परन्तु वह है ही निराकार; (इ)सलिए कोटन में कोई जानते हैं। वो निराकार बाप ही ज्ञान का सागर है। और कोई में यह सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का ज्ञान है नहीं। तुम लिख सकते हो, सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत की हिस्ट्री–जॉग्राफी सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक हम बता सकते हैं। साथ शिव की, ब्र०वि०शं० की, ल०ना० की जीवन कहानी बता सकते हैं। 84 जन्मों में सारा हिसाब आ जाता है। सारी हिस्ट्री–जॉग्राफी उसमें आ जाती है। यह बुद्धि में रहना चाहिए। यदि धारणा न होगी तो फिर घर–2 को स्वर्ग कैसे बनावेंगे! स्वर्ग न बनावेंगे, सबको सुख न देंगे तो दुखी होकर मरेंगे, पदभ्रष्ट कर देंगे। बाप आकर बच्चों पर मेहनत करते हैं। जितना चांस मिले अपनी जीवन के लिए पुरुषार्थ करना है। ऐसे थोड़े ही बैठ जाना है। हम क्या करें, मारते हैं! मारें तो अच्छा है ना! जितनी मार खावेंगे उतना मज़बूत होंगे, नष्टोमोहा बनेंगे। बाबा तो कहते हैं, गवर्मेन्ट को समझाओ, हमें पवित्र ही रहना है। कोई किसी को मार नहीं सकता। नहीं तो केस हो जाय। स्त्रियों में अक्सर मोह अधिक रहता है। पुरुष तो दूसरी–तीसरी शादी कर लेते हैं। स्त्री तो उनको ही याद करती रहती। बुद्धियोग जाता है ना। यह भी तुम्हारा बाप है, पतियों का पति है फिर उनसे बुद्धियोग टूटता क्यों है? योग से बल मिलेगा, विकर्म विनाश होंगे। शेरनी शक्तियों की तो शेर पर सवारी दिखाई है। शेर बहादुर होता है। तुम रीढ़–बकरी तो नहीं हो ना। शेर सदा गजगोर करते हैं। तुम भी ज्ञान गजगोर करते हो। जो बादल नहीं बनते, वह क्या महारानी–महाराजा बनेंगे! फिर भी तुम माताएँ जो फँसी हुई हो, कुछ न कुछ बीज बोती हो तो प्रजा में महल मिल जाते हैं। कृष्ण जैसा बच्चा मिले, यह आशा तो तुम करते आए हो ना! कृष्ण है बहुत खूबसूरत। अभी बाप आशा पूरी करते हैं। महारानी तो बनेगी; परन्तु कब? जब उनकी बनेगी। नष्टोमोहा बनेगी। बाबा का भी देखो जिस्मानी संबंधियों से रग निकल, धर्म के बच्चों में रग जुट गई है ना। अपने बच्चों को पूछते भी नहीं। वारिस ही मम्मा को बना दिया। अभी हमारे यह ब्राह्मण बच्चे कितने हैं। वे तो शूद्र हैं। रात–दिन का फर्क है। कहाँ वे शूद्र, कहाँ वे ब्राह्मण! बाप कहते हैं, बहुत ही बच्चे हैं जो मोह के जैसे कीड़े हैं। धूर–छाई में मोह रख बैठते हैं। अरे, यह तो सब भस्म हो जावेंगे। सब कब्रदाखिल हैं, उनसे दिल क्यों लगाते हो? तुम ईश्वरी(य) संतान बन जाओ। पिअर और ससुर घर को न बनाया तो तुम महाराजा–महारानी कैसे बनेंगे! यहाँ तुम बच्चे आते हो, विश्राम भी पाना है और फिर रिफ्रेश हो ज्ञान को धारण कर फिर जा बरसना है। कल–2 करते काल खा जावेगा। बाबा ने समझा दिया है कि ब्राह्मण बच्चे यदि ज़रा भी पाप का काम करेंगे तो पापात्मा दुखी हो मरेंगे। बाप यह श्राप नहीं देते; परन्तु यह एक राज़ समझाते हैं। ज़रा भी पाप न करेंगे, किसी को दुख न देंगे तो सुखी होंगे, पुण्यात्मा देवता बनेंगे; पाप करेंगे तो फिर बहुत सजाएँ भोगेंगे। खास बच्चों लिए ट्रिब्युनल बैठता है। अच्छा, शिवबाबा की महिमा का गीत सुनाओ तो याद करेंगे। बाबा को बच्चे याद करे तो बाबा मदद भी दे। बाबा की याद में तो बच्चों को खर्गा मारनी चाहिए। तुमको मालूम है, फकीर लोग खर्गा कैसे मारते हैं। कलकत्ते तरफ एक ब्रज है, वहाँ फकीर लोग ऐसे (एक्ट) करते रहते हैं– पैसा दो। तुमको भी खर्गा मारनी चाहिए– शिवबाबा, धन दो। वो तो मनुष्य, मनुष्य से भीख माँगते हैं। हमारी तो बुद्धि ऊपर चली जाती है– बाबा, बादशाही दो। फिर हम 21 जन्म राजाई करते खर्गा मारते रहेंगे। बच्चों को ज्ञान का नशा चढ़ना चाहिए। हम जावेंगे फिर आकर प्रिंस बनेंगे। हमको गॉड पढ़ाते हैं फिर हम जाकर गॉड–गॉडेस बनेंगे। यह नशा कायम रहे तो भी बहुत खुशी रहेगी। देवताओं जैसा पवित्र बनना है। वहाँ आचार आदि तमोगुणी चीज़ थोड़े ही खाते हैं। पूरा वैशन(वैष्णव) बनना है। वल्लभाचारी लोग प्याज आदि नहीं खाते हैं, फिर भी विकारी तो है ना! तो बड़े हिंसक ठहरे। देवताओं का है अहिंसा परमोधर्म। माता ही भारत को स्वर्ग बनाती है। ऐसी माता की निंदा कर रहे हैं। माता मात्र द्रोही निंदा करेंगे; मात्र सरोही कब निंदा न करेंगे। गवर्मेन्ट इस बात को समझ जाए तो फिर तुम्हारा नाम बाला होगा। माताएँ की संस्थाएँ बहुत हैं। उनको पकड़ना चाहिए। ॐ